



प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 12 अंक 8

www.csir.res.in

अगस्त 2024

केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह द्वारा सार्वजनिक निजी भागीदारी मॉडल पर 'राष्ट्रीय भू-स्थानिक डेटा भंडार' का प्रस्ताव

केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने 10 अगस्त 2024 को नई दिल्ली में पृथ्वी भवन में भारत सरकार के सभी विज्ञान मंत्रालयों और विभागों की एक संयुक्त बैठक की अध्यक्षता करते हुए एक राष्ट्रीय भूस्थानिक डेटा भंडार और सार्वजनिक निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल का प्रस्ताव रखा।

इस बैठक को संबोधित करते हुए, डॉ. जितेंद्र सिंह ने अंतरिक्ष विभाग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग और पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय को किसानों, ग्रामीण कारीगर और अन्य लोगों के कल्याण के लिए नवीन और स्वदेशी उत्पाद बनाने के लिए उद्योग और स्टार्टअप इकोसिस्टम के उपयोग एवं बेहतर समन्वयन के लिए एक एकीकृत भू-स्थानिक इंटरफेस बनाने का निर्देश दिया।

केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री, परमाणु ऊर्जा विभाग, अंतरिक्ष विभाग, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन



राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने जियो-आईसीटी बुनियादी ढांचे के सुचारू कनेक्शन पर बल दिया। इस अवसर पर उन्होंने सार्वजनिक निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल में गैर-सरकारी क्षेत्रों के सहयोग से ज्ञान और संसाधनों के संयोजन पर आधारित टिकाऊ इकोसिस्टम का मंत्र भी साझा किया।

केंद्रीय मंत्री महोदय ने प्रारंभिक उद्योग जुड़ाव और आम लोगों के लिए बड़ी संख्या में लाभों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि मंत्रालय के अंतर्गत

सभी विभाग सामान्य उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए समन्वय में कार्य करेंगे।

इस बैठक का एक मुख्य आकर्षण एक महीने तक चलने वाले राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस समारोह और 23 अगस्त को भारत मंडपम में मुख्य कार्यक्रम की समीक्षा थी। उन्होंने आने वाले दिनों में अन्य महत्वपूर्ण घटनाओं का भी निरीक्षण किया।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने प्रस्तावित "विज्ञान शक्ति" पोर्टल की प्रगति की भी जानकारी प्राप्त की और वैज्ञानिक पोर्टलों के संबंध में

अपने अनुभव के आधार पर कुछ व्यावहारिक टिप्पणियाँ प्रस्तुत कीं।

इस अवसर पर भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी के एकीकृत वेब भंडार को लाइव किया गया और फीडबैक का संग्रह केंद्रीय मंत्री महोदय के साथ साझा किया गया। विभाग ने सभी वैज्ञानिक विभागों के लिए संयुक्त एकल नोडल बनने के लिए पोर्टल के भविष्य में एकीकरण और सुधार के लिए केंद्रीय मंत्री महोदय का मार्गदर्शन भी मांगा। डॉ.जितेंद्र सिंह ने सभी प्रकार के अनुसंधान के

लिए जैव प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत 'एक सामान्य पोर्टल' की वर्तमान स्थिति की समीक्षा की।

बैठक के समापन पर, डॉ. जितेंद्र सिंह ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के भारत @2047 की परिकल्पना का स्मरण किया और इस परिकल्पना को प्राप्त करने में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला।

भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार डॉ. ए. के. सूद; विज्ञान और

प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के सचिव प्रोफेसर अभय करंदीकर; जैव प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव डॉ. राजेश गोखले; पृथ्वी विज्ञान सचिव श्री रवि चंद्रन; वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) की महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी भी बैठक में उपस्थित हुईं।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष डॉ. एस. सोमनाथ इस बैठक में ऑनलाइन शामिल हुए।

सीएसआईआर-आईआईआईएम ने कर्नल सर आर.एन. चोपड़ा की 142वीं जयंती मनायी

सीएसआईआर- भारतीय समवेत औषध संस्थान (सीएसआईआर-आईआईआईएम), जम्मू ने 17 अगस्त 2024 को अपने संस्थापक निदेशक कर्नल सर आर.एन. चोपड़ा की 142वीं जयंती मनाई। इस अवसर पर डॉ. ज़बीर अहमद निदेशक, सीएसआईआर-आईआईआईएम ने वैज्ञानिकों, तकनीकी और प्रशासनिक कर्मचारियों, विद्वानों और अन्य कर्मिकों के साथ कर्नल सर आर.एन. चोपड़ा की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। सीएसआईआर-आईआईआईएम परिवार ने इस महान व्यक्तित्व की दूरदर्शिता और उत्कृष्टता को संजोने के लिए उनके जन्मदिन को बड़े उत्साह के साथ मनाया। डॉ. ज़बीर ने कर्मिकों को संबोधित करते हुए ने भारतीय चिकित्सा पद्धतियों के विकास में कर्नल चोपड़ा के महत्वपूर्ण योगदान के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि स्वदेशी चिकित्सा पद्धतियों पर समिति की अध्यक्षता कर्नल सर आर.एन. चोपड़ा ने की थी और अपनी सिफारिशों में उन्होंने भारतीय प्रणालियों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया था

और उनके समेकन की प्रक्रिया उनके कार्यकाल के दौरान ही शुरू हुई थी। डॉ. अहमद ने कहा कि हालांकि भारतीय और पश्चिमी प्रणालियों का एकीकरण अभी भी एक दूरगामी विषय है, लेकिन उनकी अध्यक्षता वाली संबंधित समिति के माध्यम से आयुर्वेदिक और यूनानी फार्माकोपिया तैयार करने के लिए उनके द्वारा की गई एक शुरुआत इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कार्य था।

उन्होंने कहा कि कर्नल आर.एन. चोपड़ा जम्मू का गौरव थे, जिन्हें भारतीय औषध विज्ञान के जनक के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने उस समय जब कोई सुविधाएं उपलब्ध नहीं थीं, कैनाबिस (भाग) और अन्य संभावित औषधीय पौधों पर काफी उल्लेखनीय काम किया था। उन्होंने सीएसआईआर-आईआईआईएम के अपने एस एंड टी सहयोगियों से कहा कि इस महान वैज्ञानिक को वास्तविक श्रद्धांजलि तब होगी यदि हम उनके सपनों को पूरा करने के लिए अपने स्वदेशी ज्ञान के वैश्वीकरण के लिए अत्याधुनिक विज्ञान के द्वारा कड़ी मेहनत



करेंगे, जिसका विशेष रूप से स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में दूरगामी प्रभाव होगा। इस अवसर पर प्रमुख रूप से अब्दुल रहीम, प्रमुख, आरएमबीडी एवं आईएसटी तथा शाखा प्रयोगशाला श्रीनगर, डॉ. शशांक के. सिंह, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. धीरज व्यास, प्रमुख, प्लांट साइंसेज और एग्रोटैक्नोलॉजी डिवीजन (पीएसए), डॉ. दीपिका सिंह, प्रमुख, गुणवत्ता प्रबंधन और इंस्ट्रूमेंटेशन प्रभाग और डॉ. सौरभ सरन, आई/सी टेक्नोलॉजी बिजनेस इनक्यूबेटर और एआईसी उपस्थित थे।

सीएसआईआर-एनपीएल ने भारतीय निर्देशक द्रव्य (बीएनडी) पर एक विचार-मंथन कार्यक्रम का आयोजन किया

सीएसआईआर-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला ने 9 अगस्त 2024 को 'भारतीय निर्देशक द्रव्य (बीएनडी) [प्रमाणित भारतीय संदर्भ सामग्री] के माध्यम से एसआई ट्रेसबल मानकों को प्रदान करते हुए माप गुणवत्ता में वैश्विक क्षमता संवर्धन' पर एक दिवसीय विचार-मंथन बैठक का आयोजन किया।

इस कार्यक्रम का शुभारंभ श्री राजेश कुमार सिंह, सचिव, डीपीआईआईटी, भारत सरकार के द्वारा किया गया। इस अवसर पर, श्री वैद्य राजेश कोटेचा, सचिव, आयुष; सुश्री डॉ. एन. कलैसेल्वी, सचिव, डीएसआईआर और महानिदेशक, सीएसआईआर; डॉ. परवीन मलिक, सीईओ, (एग्रीइन्वेस्ट, इंडिया लिमिटेड); डॉ. वेणुगोपाल अचंता, निदेशक, सीएसआईआर-एनपीएल और बीएनडी डिवीजन, सीएसआईआर-एनपीएल के प्रमुख डॉ. एस. पी. सिंह भी उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम के सुअवसर पर श्री राजेश कुमार सिंह, सचिव, डीपीआईआईटी, भारत सरकार ने समारोह को संबोधित करते हुए इस पहल के लिए सीएसआईआर एनपीएल के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने भारत के माननीय प्रधानमंत्री के 'आत्मनिर्भर भारत' के सपने को साकार करने के लिए सभी हितधारकों को साथ आने और एक साथ मिलकर कार्य करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

सीएसआईआर-एनपीएल के निदेशक डॉ. वेणुगोपाल अचंता ने अपनी शुरुआती टिप्पणी में बीएनडी के महत्व और सीएसआईआर-एनपीएल के प्रयासों से अब तक हुई प्रगति पर प्रकाश डाला। सीएसआईआर की महानिदेशक सुश्री डॉ. एन. कलैसेल्वी ने इस प्रयास में सीएसआईआर प्रयोगशालाओं को मजबूत करने के बारे में लोगों को सूचित



किया। उन्होंने सीएसआईआर की प्रयोगशालाओं के निदेशकों और वैज्ञानिकों से बीएनडी की आवश्यकता को पूरा करने के लिए एक मजबूत तंत्र स्थापित करने का आह्वान किया। साथ ही उन्होंने इसे न केवल स्वीकार्य बनाने के लिए बल्कि वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए मिलकर काम करने की अपील भी की। श्री वैद्य राजेश कोटेचा, सचिव, आयुष ने अपने संबोधन में हर्बल दवाओं और आयुष उत्पादों के क्षेत्र में संदर्भ सामग्री की आवश्यकता पर जोर दिया।

डॉ. प्रवीण मलिक ने कृषि, दवाओं और टीकों के क्षेत्र में मानक संदर्भ सामग्री की आवश्यकता पर प्रकाश डाला और वैश्विक स्तर पर बीएनडी की स्थापना के लिए एक विस्तृत रोडमैप को सामने रखा। इस बैठक में सीएसआईआर-एनपीएल, सीएसआईआर-एम्पी, सीएसआईआर-आईएचबीटी, सीएसआईआर-सीबीआरआई, सीएसआईआर-सीरी, सीएसआईआर-आईआईपी जैसे विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के निदेशकों के साथ ही सीएफएसएल, एनडीटीएल, एफएसएसएआई, आईपीएफटी, आईपीसी,

सीडब्ल्यूसी, जेजेएम, बीआईएस, एनटीएच के महानिदेशक और निदेशक प्रतिनिधि शामिल हुए। इसके अलावा इस कार्यक्रम में मान्यता प्राप्त निकाय, उद्योग प्रतिनिधि और अन्य वैज्ञानिक संस्थान के प्रतिनिधियों ने भी प्रतिभागिता की।

कार्यक्रम में चर्चा का मुख्य केंद्र स्थानीय स्तर पर उत्पादित उत्पादों की बेहतर गुणवत्ता नियंत्रण की दिशा में भारतीय उद्योगों के विभिन्न क्षेत्रों द्वारा उपयोग के लिए स्वदेशी-प्रमाणित सामग्रियों यानी बीएनडी के विकास और एसआई मानकों का पता लगाने पर था। बैठक के दौरान देश में भारतीय निर्मित सीआरएम/बीएनडी के विकास एवं उपयोग में मौजूदा चुनौतियों और अवसरों पर विचार-विमर्श किया गया। इस अवसर पर यूजर्स (उपयोग करने वालों) को लाभ समझाने के लिए पानी और सीमेंट में बीएनडी की सफलता की कहानियों को विस्तार से समझाया गया। विभिन्न परीक्षण प्रयोगशालाओं की संबंधित मान्यता और उचित नियामक ऑडिट से जुड़े मुद्दों और चुनौतियों के साथ ही आगे बढ़ने के संभावित तरीकों पर भी चर्चा की गई।

सीएसआईआर-एम्प्री में राष्ट्रीय हिंदी विज्ञान सम्मेलन का आयोजन

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद-प्रगत पदार्थ तथा प्रक्रम अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर- एम्प्री), भोपाल ने विज्ञान भारती मध्य भारत प्रांत; मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, भोपाल; मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल; सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर), नई दिल्ली और अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल के सहयोग से "राष्ट्रीय हिंदी विज्ञान सम्मेलन 2024" का आयोजन किया। यह सम्मेलन का चौथा संस्करण था, जो 30-31 जुलाई को आयोजित किया गया।

इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य शोधकर्ताओं को विज्ञान से जुड़े नवीनतम शोध कार्यों को हिंदी में प्रस्तुत करने लिए उन्हें प्रोत्साहित करने हेतु एक मंच प्रदान करना था, जिससे इस भाषा के माध्यम से विज्ञान और प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने में बढ़ावा मिले। इस कार्यक्रम का उद्घाटन मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने किया। माननीय मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में हिन्दी भाषा में ज्ञान और विज्ञान को आगे बढ़ाने के महत्व पर जोर दिया। डॉ. यादव ने कहा, "हम अपनी भाषा में ज्ञान और विज्ञान के माध्यम से ही विश्वगुरु बन सकते हैं।" उन्होंने इस राष्ट्रीय सम्मेलन को एक अंतरराष्ट्रीय आयोजन के रूप में विकसित होने की आशा व्यक्त की।

सीएसआईआर- प्रगत पदार्थ तथा प्रक्रम अनुसंधान संस्थान के निदेशक श्री अवनीश कुमार श्रीवास्तव ने अपने स्वागत भाषण में इस सम्मेलन के माध्यम से हिंदी में विज्ञान एवं



प्रौद्योगिकी अनुसंधान को बढ़ावा देने के महत्व पर प्रकाश डाला और वैज्ञानिक समुदाय से इसमें सक्रिय योगदान देने का आग्रह किया। सीएसआईआर-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला के निदेशक और सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) के कार्यवाहक निदेशक प्रो. वेणुगोपाल अचंता ने विज्ञान संचार के माध्यम के रूप में हिंदी के उपयोग के महत्व को रेखांकित किया।

इस अवसर पर सीएसआईआर-निस्पर द्वारा अपने अन्य सह-आयोजकों के सहयोग से एक विशेष कार्यक्रम के रूप में विज्ञान कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। मध्य प्रदेश सरकार के संस्कृति, पर्यटन, धार्मिक न्यास विभाग के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेन्द्र भाव सिंह लोधी द्वारा इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। इस विज्ञान कविता संगोष्ठी ने कवियों, विज्ञान संचारकों और लेखकों को हिंदी के माध्यम से विज्ञान को बढ़ावा देने के लिए एक मंच प्रदान किया। इस कार्यक्रम में देश के 12 प्रतिष्ठित विज्ञान कवियों ने विज्ञान

के विभिन्न पहलुओं पर अपनी कविताएं प्रस्तुत कीं। 31 जुलाई को समापन सत्र में मध्य प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ला ने भाग लिया। इस सत्र के दौरान विभिन्न विश्वविद्यालयों और सीएसआईआर- एम्प्री के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। सम्मेलन में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, आयुर्वेद और विज्ञान संचार के विविध विषयों पर छह सत्र आयोजित किए गए। राष्ट्रीय हिंदी विज्ञान सम्मेलन 2024 हिंदी में विज्ञान और प्रौद्योगिकी आधारित अनुसंधान को समृद्ध करने और भाषा में वैज्ञानिक चर्चा के साथ अधिक से अधिक जुड़ाव को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस सम्मेलन में देश के विभिन्न प्रान्तों से छात्र, शोधार्थी, विज्ञान शिक्षक, वैज्ञानिक तथा विज्ञान प्रेमियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

सीएसआईआर-एनपीएल ने एयरोस्पेस, इलेक्ट्रॉनिक्स, इंस्ट्रूमेंटेशन और रणनीतिक क्षेत्र पर आधारित तीन दिवसीय एक कार्यशाला का आयोजन किया

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर)-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (एनपीएल) ने सीएसआईआर-केंद्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन (सीएसआईआर-सीएसआईओ), सीएसआईआर-केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीरी) और सीएसआईआर-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान की सहभागिता वाली प्रयोगशालाओं के साथ अपनी 'एक सप्ताह एक थीम' पहल के तहत राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला परिसर में 2 से 4 अगस्त तक एयरोस्पेस, इलेक्ट्रॉनिक्स, इंस्ट्रूमेंटेशन और रणनीतिक क्षेत्र (ईआईएसएस) थीम पर तीन दिवसीय एक कार्यशाला का आयोजन किया।

सीएसआईआर-एनपीएल के निदेशक प्रो. वेणुगोपाल अचंता ने कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागियों का स्वागत किया। इसके बाद, सीएसआईआर-एनपीएल के निदेशक और ईआईएसएस थीम निदेशक डॉ. अभय अनंत पशिलकर ने मुख्य संबोधन प्रस्तुत किया। उन्होंने ईआईएसएस थीम पर विस्तार से चर्चा की और आत्मनिर्भर भारत, स्वस्थ भारत और मेक इन इंडिया पहल को प्राप्त करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने ईआईएसएस थीम से जुड़े अनुमानित लक्ष्यों पर भी विस्तार से चर्चा की।

सीएसआईआर-सीरी के निदेशक डॉ. पी.सी. पंचारिया ने औद्योगिक विकास



को गति प्रदान करने में ईआईएसएस थीम की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने सहज और सरल प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए एकल खिड़की प्रणाली के महत्व पर भी विस्तार से चर्चा की।

कार्यशाला के संयोजक डॉ. एस. के. दुबे ने तीन दिवसीय विषय-वस्तु की रूपरेखा प्रस्तुत की। इसमें छात्र-वैज्ञानिक संवाद सत्र, स्टार्टअप/एमएसएमई/उद्योग जगत की बैठक और ईआईएसएस में महिलाओं की भूमिका पर फोकस करना शामिल था। उन्होंने धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यशाला का समापन किया। छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम में 60 से अधिक छात्रों ने भाग लिया। उन्होंने प्रदर्शनी का आयोजन किया और दूसरे सत्र के दौरान वैज्ञानिकों से बातचीत की। इस कार्यक्रम के पहले दिन का समापन प्रदर्शनी पर आधारित

विज्ञान प्रश्नोत्तरी के साथ हुआ।

इस कार्यशाला के अंतर्गत आयोजित किए गए निर्धारित कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:

पहला दिन: उद्घाटन समारोह के बाद विज्ञान के क्षेत्र में नवीनतम तकनीकों और नवाचारों को प्रदर्शित करने वाली एक प्रदर्शनी आयोजित की गई। जिज्ञासा कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, स्कूली छात्रों को आगामी प्रगति के बारे में अपनी जागरूकता बढ़ाने और विज्ञान और प्रौद्योगिकी में उनकी रुचि को प्रेरित करने के लिए प्रदर्शनी देखने के लिए आमंत्रित किया गया। एनपीएल संग्रहालय में 'अत्याधुनिक तकनीकों के उत्पादों का प्रदर्शन' इस प्रदर्शनी का केंद्र था।

दूसरा दिन: सीएसआईआर द्वारा उद्योगों को विकसित और विक्रय गई तकनीकों पर

प्रकाश डाला गया तथा उद्योग सहयोग पर फोकस किया गया। उद्योग जगत के बीच सहयोग के लिए एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। चर्चा के उपरांत विभिन्न उद्योग समूह ने अपनी तकनीकों का प्रदर्शन किया और विशेषज्ञों ने उन तकनीकों के बारे में लोगों को बताया। इस दिन विशिष्ट वैज्ञानिकों की विभिन्न वार्ताएं भी हुईं उन्होंने नए शोध एवं तकनीकों के बारे में जानकारी प्रदान की और सहयोग और ज्ञान साझा करने को बढ़ावा देने के लिए नेटवर्किंग पर विशेष बल दिया।

तीसरा दिन : इस दिन आईआईएसएस में महिलाओं की हर क्षेत्र में समान भागीदारी की पहचान करते हुए उत्सव मनाया शामिल था। समारोह के अंतिम दिन विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं की उपलब्धियों का जश्न मनाया गया, जिसमें महिला वैज्ञानिकों द्वारा नए और महत्वपूर्ण शोधों पर वार्ताओं का आयोजन किया गया। इन सत्रों का उद्देश्य महिलाओं को



प्रौद्योगिकी विकास में करियर बनाने के लिए प्रेरित करना एवं प्रोत्साहित करना था।

इन वार्ताओं का फोकस महत्वपूर्ण विषयों और भविष्य के रुझानों पर केन्द्रित था।

सीएसआईआर-सीएफटीआरआई ने वायनाड में भूस्खलन की घटना से प्रभावित लोगों और बचावकर्मियों को पोषण युक्त खाद्य उत्पाद वितरित किया।

मैसूर स्थित सीएसआईआर-केन्द्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीएफटीआरआई) ने केरल के वायनाड में भूस्खलन की घटना से प्रभावित लोगों और बचावकर्मियों की मदद के लिए वहां राहत शिविरों में पोषण युक्त खाद्य उत्पाद भेजे हैं। सीएसआईआर-सीएफटीआरआई वायनाड में राहत शिविरों के लिए लंबे समय तक चलने वाले और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थों के साथ-साथ अन्य विभिन्न पौष्टिक खाद्य पदार्थ भेजे हैं जिनमें न्यूट्रा स्पिरुलिना चिककी, फोर्टिफाइड मैंगो बार, बच्चों के लिए ऊर्जा और प्रोटीन से भरपूर बर्फी, ग्लूटेन-मुक्त रागी बिस्कुट, रागी पेय मिश्रण, बाजरा उपमा मिश्रण, कोकम फ्रूट बार, आंवला कैडी, इमली कैडी, उच्च प्रोटीन रस्क, सांभर मिश्रण, इंस्टेंट सांभर पाउडर, 6 से 10 महीने के बच्चों के लिए शिशु आहार फार्मूला और अन्य शामिल हैं। इन खाद्य उत्पादों में लाभकारी प्रोटीन की उच्च सांद्रता निहित है, तथा इनमें महत्वपूर्ण विटामिन और खनिज विद्यमान हैं, जो कुपोषण से बचने और इस घटना से प्रभावित लोगों की प्रतिरक्षा तंत्र में सुधार करने में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान

करेगा।

सीएसआईआर-सीएफटीआरआई इन खाद्य उत्पादों को स्वदेशी प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके विकसित किया है जो लाभकारी प्रोटीन की उच्च सांद्रता से समृद्ध हैं, और महत्वपूर्ण विटामिन और खनिजों से फोर्टिफाइड होते हैं, जो कुपोषण से बचने में मदद करेंगे। कुछ खाद्य उत्पाद तुरंत खाने योग्य होते हैं उन्हें पकाने की आवश्यकता नहीं होती है। सीएसआईआर-सीएफटीआरआई ने शिशु आहार (शिशुपोषण) पर विशेष ध्यान दिया है क्योंकि ऐसी प्राकृतिक आपदा के दौरान शिशुओं के लिए उचित पौष्टिक भोजन की उपलब्धता चुनौतीपूर्ण होती है। सीएसआईआर-सीएफटीआरआई ने अपनी प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके विकसित किए गए हर्बल हैंड



सैनिटाइज़र भी भेजे हैं। डॉ. श्रीदेवी अन्नपूर्णा सिंह, निदेशक, सीएसआईआर-सीएफटीआरआई के नेतृत्व में संस्थान ने इन वस्तुओं को क्रमशः 3, 5 और 7 अगस्त को तीन बैचों में भेजा है। अपनी स्थापना के बाद से ही इस संस्थान ने खाद्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में गहन शोध और विकास में तत्परता से लगा हुआ है। इससे पूर्व भी संस्थान ने प्राकृतिक आपदाओं के दौरान कई बार ऐसे ही खाद्य पदार्थ भेजकर राहत कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

सीएसआईआर-आईआईसीटी के वैज्ञानिक डॉ. एस. श्रीधर रॉयल सोसाइटी ऑफ केमिस्ट्री, लंदन के फेलो चुने गए

सीएसआईआर भारतीय रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद में रासायनिक इंजीनियर और मुख्य वैज्ञानिक डॉ. सुंदरगोपाल श्रीधर को प्रतिष्ठित रॉयल सोसाइटी ऑफ केमिस्ट्री (एफआरएससी), लंदन, यूके के फेलो के रूप में शामिल किया गया है।

डॉ. श्रीधर ने शोध वैज्ञानिक के रूप में अपने 26 वर्षों के कार्यकाल के दौरान रसायन और संबद्ध उद्योगों के लिए कई तकनीकों का विकास और उनका हस्तांतरण किया है। उन्होंने समाज कल्याण की दिशा में भी अनेक कार्यों में भी बहुत योगदान दिया है। उनके करियर की प्रमुख उपलब्धियों में इलेक्ट्रोडायलिसिस, नैनोफिल्ट्रेशन, गैस परमीएशन और विलायक रिकवरी के लिए 500-5000 लीटर प्रति घंटे की क्षमता वाली रिवर्स ऑस्मोसिस, फार्मास्युटिकल, स्टील, टेक्सटाइल, एरोमा केमिकल्स और पेट्रोकेमिकल उद्योगों में अपशिष्ट उपचार और गैस शोधन पर आधारित कई मेम्ब्रेन पायलट प्लांट की कमीशनिंग शामिल है।

डॉ. श्रीधर ने भारत के 10 राज्यों में फ्लोरोसिस, टाइफाइड और अन्य जलजनित बीमारियों से प्रभावित 5 मिलियन आबादी के लिए भूजल, सतही जल और बाढ़ के पानी को शुद्ध करने के लिए 600-4000 लीटर प्रति घंटा क्षमता के नैनोफिल्ट्रेशन, अल्ट्राफिल्ट्रेशन और रिवर्स ऑस्मोसिस पर

आधारित 75 से अधिक जल शोधन संयंत्रों को अभिकल्पित और स्थापित किया है। उनके अन्य नवाचारों में सरकारी और निजी अस्पतालों में क्रोनिक किडनी रोग से पीड़ित 2 लाख से अधिक रोगियों के डायलिसिस के लिए चिकित्सा-ग्रेड अल्ट्राप्योर पानी के लिए एक नई और सस्ती प्रणाली शामिल है। उन्होंने पानी की कमी वाले क्षेत्रों, अस्पतालों और रेलवे स्टेशनों में हवा में मौजूद सापेक्ष आर्द्रता से पुनः खनिजयुक्त पेयजल का उत्पादन करने के लिए 60 से 1000 लीटर प्रतिदिन की क्षमता का एक वायुमंडलीय जल जनरेटर डिजाइन किया है।

कोविड-19 से निपटने के लिए डॉ. श्रीधर ने कम लागत वाले नए मल्टिलेयर वॉशेबल



मास्क बनाए, जिन्हें स्कूली बच्चों और फ्रंटलाइन वर्कर्स सहित 6 लाख से ज्यादा लोगों को मुहैया कराया गया। इन मास्क से एनजीओ को 2 करोड़ रुपये का राजस्व मिला और 500 वरिष्ठ नागरिकों और महिला स्वयं सहायता समूहों को रोजगार मिला।

डॉ. श्रीधर ने 53 एच-इंडेक्स वाली प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में 181 शोध



पत्र प्रकाशित किए हैं। उन्हें 2021, 2022 और 2023 में स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी, यूएसए और एल्सेवियर साइंस पब्लिशर्स द्वारा दुनिया भर के शीर्ष 2 प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों में स्थान दिया गया है। उनके नाम 15 पेटेंट, 4 पुस्तकें और 50 पुस्तक अध्याय हैं। डॉ. श्रीधर 70 प्रतिष्ठित विज्ञान पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं, जिनमें सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2007, स्कोपस युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2011, एनएसआई रिलायंस इंडस्ट्रीज प्लेटिनम जुबली पुरस्कार 2013, आईआईटी-रुड़की से 2015 में वीएनएमएम पुरस्कार, 2016 से 2020 तक पांच सीआईपीईटी राष्ट्रीय पुरस्कार, 2017 में आईआईटी-खड़गपुर से नीना सक्सेना उत्कृष्टता प्रौद्योगिकी पुरस्कार, 2019-21 के लिए तीन एचपीसीएल एनजीआईसी पुरस्कार, सात आईआईसीएचई पुरस्कार और एसोचैम पुरस्कार 2023 शामिल हैं।

पारंपरिक ज्ञान के संचार एवं प्रसार (सीडीटीके-2024) पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के आयोजन की तैयारी

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर), नई दिल्ली ने राष्ट्रीय पहल स्वस्तिक (वैज्ञानिक रूप से मान्य सामाजिक पारंपरिक ज्ञान) के अंतर्गत गुरुग्राम विश्वविद्यालय, हरियाणा के साथ संयुक्त रूप से 13-14 नवंबर 2024 के दौरान गुरुग्राम विश्वविद्यालय में पारंपरिक ज्ञान के संचार एवं प्रसार पर दूसरे संस्करण (सीडीटीके-2024) पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन करने जा रहा है। इस सम्मेलन के



संबंधित विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श करने के लिए 5 अगस्त 2024 को गुरुग्राम विश्वविद्यालय में एक बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता गुरुग्राम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर



दिनेश कुमार ने की और इसमें सीएसआईआर-निस्पर की प्रधान वैज्ञानिक डॉ. चारु लता और गुरुग्राम विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. धीरेंद्र कौशिक के नेतृत्व में दोनों संस्थानों के अधिकारियों ने भाग लिया। बैठक की शुरुआत डॉ. कौशिक द्वारा कार्यक्रम के बारे में संक्षिप्त

परिचय के साथ हुई। बाद में डॉ. चारु लता ने उपस्थित लोगों को स्वस्तिक के विजन और मिशन और सीडीटीके-2024 सम्मेलन के आयोजन के उद्देश्य से अवगत कराया।

कुलपति ने टीम को शुभकामनाएं दीं और सम्मेलन के सफल आयोजन के लिए पूरे दिल

से समर्थन का आश्वासन दिया। इसके बाद प्रोफेसर दिनेश कुमार और अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा सम्मेलन के फ्लायर का विमोचन

किया गया। इसके साथ ही छात्रों, शोधकर्ताओं और संकायों के साथ-साथ पारंपरिक ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में वैश्विक स्तर पर काम करने वाले विज्ञान संचारकों और नीति निर्माताओं के लिए सम्मेलन के पंजीकरण लिंक को सक्रिय किया गया।

डॉ. सी. आनंदरामकृष्णन को राष्ट्रीय विज्ञान श्री पुरस्कार 2024 से सम्मानित किया गया

सीएसआईआर-राष्ट्रीय अंतर्विषयी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-नीस्ट) के निदेशक डॉ. सी. आनंदरामकृष्णन को भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान श्री पुरस्कार 2024 से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रदान किया गया।

डॉ. सी. आनंदरामकृष्णन वर्तमान में सीएसआईआर- राष्ट्रीय अंतर्विषयी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान, तिरुवनंतपुरम के निदेशक के रूप में कार्यरत हैं। सीएसआईआर-नीस्ट के निदेशक के रूप में नियुक्त होने से पूर्व, वे राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी, उद्यमिता और प्रबंधन संस्थान (एनआईएफटीईएम), तंजावुर (राष्ट्रीय महत्व का एक संस्थान) जिसे पहले भारतीय खाद्य प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईएफपीटी) के रूप में जाना जाता था) में 2016 से निदेशक थे। उन्होंने अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नई से रासायनिक अभियांत्रिकी में बीटेक और अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नई से एमटेक किया। उन्होंने यूनाइटेड किंगडम में लोफबोरो विश्वविद्यालय में खाद्य इंजीनियरिंग में विशेषज्ञता के साथ रासायनिक अभियांत्रिकी में डॉक्टरेट अनुसंधान किया है। डॉ. आनंदरामकृष्णन एक सक्रिय शोधकर्ता हैं जिन्होंने 20 से अधिक वर्षों तक अनुसंधान और प्रशासन में काम किया है। उनके शोध को 5.17 के औसत प्रभाव कारक, दो अंतरराष्ट्रीय पेटेंट और सात भारतीय पेटेंट

के साथ 160 से अधिक प्रकाशनों द्वारा प्रलेखित किया गया है। उन्होंने प्रतिष्ठित कंपनियों द्वारा प्रकाशित दस पुस्तकों और 68 पुस्तक अध्यायों का लेखन और संपादन भी किया है। वे 50 से अधिक स्नातक और स्नातकोत्तर प्रबंध और 13 पीएचडी प्रबंधों के प्रभारी रहे हैं।

डॉ. आनंदरामकृष्णन राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (एफएनएएससी) के निर्वाचित सदस्य, राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी के फेलो (एनएएएस), रसायन विज्ञान की रॉयल सोसाइटी (एफआरएससी) के फेलो, जीव विज्ञान के रॉयल सोसायटी (एफआरएसबी) के सदस्य, खाद्य वैज्ञानिकों और प्रौद्योगिकीविदों के संघ (भारत)-एएफएसटी (I) के फेलो और इंजीनियर्स संस्थान (एफआईई) के फेलो हैं। वे भारत सरकार के अधीन स्वायत्त निकायों की पेशेवर समितियों के सदस्य हैं। वे प्रतिष्ठित पत्रिकाओं के संपादकीय बोर्ड के सदस्य और विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में अध्ययन बोर्ड के सदस्य के रूप में भी कार्य करते हैं।

डॉ. आनंदरामकृष्णन को प्रतिष्ठित 'आईसीएआर - कृषि विज्ञान में उत्कृष्ट अनुसंधान के लिए राफी अहमद किदवई पुरस्कार -2019' से भी सम्मानित किया जा चुका है। डीबीटी, भारत सरकार ने उन्हें टाटा इनोवेशन फेलोशिप 2019-20 से सम्मानित किया है। उन्हें उनके



उत्कृष्ट योगदान के लिए इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स, राष्ट्रीय डिजाइन और अनुसंधान फोरम द्वारा राष्ट्रीय डिजाइन पुरस्कार 2019 भी दिया जा चुका है। उन्होंने 2018 में प्रतिष्ठित एनएएसआई-रिलायंस इंडस्ट्रीज प्लेटिनम जुबली अवार्ड और साथ ही 2018 में खाद्य प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी और नवाचार के विकास के लिए एआईएफपीए विशेष प्लेटिनम जयंती पुरस्कार भी प्राप्त किया। तमिलनाडु राज्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद ने भी उन्हें तमिलनाडु राज्य वैज्ञानिक पुरस्कार (टीएनएसए) 2018 के लिए नामांकित किया है और अब उन्हें राष्ट्रीय विज्ञान श्री पुरस्कार 2024 से सम्मानित किया गया है जो सीएसआईआर-नीस्ट और पूरे सीएसआईआर परिवार के लिए एक गौरव का विषय है।

सीएसआईआर और लघु उद्योग भारती के बीच समझौता ज्ञापन

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) और लघु उद्योग भारती (एलयूबी) ने 21 अगस्त 2024 को सीएसआईआर मुख्यालय में सीएसआईआर के महानिदेशक तथा एलयूबी के अखिल भारतीय सचिव और एलयूबी के अध्यक्ष की उपस्थिति में सूक्ष्म और लघु उद्यमियों को चयनित सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। लघु उद्योग भारती 1994 से भारत में सूक्ष्म और लघु उद्योगों का एक पंजीकृत अखिल भारतीय संगठन है, जिसकी उपस्थिति भारत के 27 राज्यों के 575 से अधिक जिलों में है और इसके लगभग 51000 से अधिक सदस्य हैं।

इस समझौता ज्ञापन के विशिष्ट उद्देश्यों में एलयूबी के तहत चिन्हित किए गए एमएसएमई को 100 दिनों के भीतर सीएसआईआर की 100 तकनीकी जानकारी/प्रौद्योगिकी/उत्पादों का हस्तांतरित किया जाना शामिल है। इसके अतिरिक्त प्रौद्योगिकी उन्नयन, विनियामक मानदंडों को अनुपालन, बाजार पहुंच बढ़ाने और निर्यात संवर्धन/आयात प्रतिस्थापन के लिए सीएसआईआर के दायरे में एमएसएमई द्वारा रुचि के किसी भी सुझाए गए क्षेत्र में नई प्रौद्योगिकी विकसित करने के लिए सीएसआईआर को सुझाव/विचार/समस्याएं प्रदान करना भी शामिल है।



इस कार्यक्रम में डॉ. एन कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव डीएसआईआर; डॉ. आरपी सिंह, प्रमुख, आईएमडी; डॉ. विभा मल्होत्रा साहनी, प्रमुख, टीएमडी; डॉ. देबाशीष बंधोपाध्याय, डॉ. महेश कुमार और सुश्री दीप्ति शर्मा डुल्लू तथा सीएसआईआर के अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने प्रतिभागिता की। एलयूबी की ओर से श्री घनश्याम ओझा, श्री ओम प्रकाश गुप्ता, श्री दीवान चंद और सुश्री आरती सहगल समेत संगठन के अन्य सदस्यों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

इस समझौता ज्ञापन कार्यक्रम के दौरान, 6 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं

यथा- सीएसआईआर-सीएसआईओ, सीएसआईआर-आईएमएमटी, सीएसआईआर-एनएएल, सीएसआईआर-एनबीआरआई, सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई और सीएसआईआर-सीएफटीआरआई से कुल 15 प्रौद्योगिकियां कंपनियों को हस्तांतरित की गईं। इन हस्तांतरित की गई प्रौद्योगिकियों के अंतर्गत कीटनाशक पहचान किट, मल्टी-कॉप्टर ड्रोन, वायु गुणवत्ता निगरानी प्रणाली, अपशिष्ट बायोमास से पोटाश समृद्ध बायोचार, ग्लूटेन मुक्त बिस्कुट आदि जैसी प्रौद्योगिकियां शामिल थीं। यह समझौता ज्ञापन निर्यात संवर्धन और आयात प्रतिस्थापन सहित सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों के लिए बाजार पहुंच का विस्तार करने के साथ सभी आवश्यक विनियामक मानदंडों को पूरा करेगा। एलयूबी के लिए, कम लागत वाली सीएसआईआर प्रौद्योगिकियां किफायती लागत पर एलयूबी इकाइयों/एमएसएमई के संचालन में दक्षता लाएगी, साथ ही सीएसआईआर के सामाजिक योगदान के बारे में जागरूकता लाएगी।

सीएसआईआर- सीमैप और आईसीएआर-एनडीआरआई ने सीएसआईआर अरोमा मिशन के तीसरे चरण में लक्षित शोध विषय पर संयुक्त अनुसंधान शुरू किया

सीएसआईआर-केंद्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान (सीएसआईआर- सीमैप) और आईसीएआर-राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान ने (आईसीएआर- एनडीआरआई) ने सीएसआईआर अरोमा मिशन चरण III के अंतर्गत "वेस्ट टू वेल्थ" कार्य पैकेज के तहत संयुक्त सहयोगपूर्ण अनुसंधान शुरू किया है।

इस संयुक्त सहयोगपूर्ण अनुसंधान गतिविधि में डेयरी पशु चारे के विकल्प के रूप में तेल रहित सुगंधित पादप बायोमास की क्षमता का पता लगाया जाएगा। सीएसआईआर- सीमैप की टीम ने आईसीएआर-एनडीआरआई के संबंधित विभाग/प्रयोगशाला का दौरा किया और एनडीआरआई के निदेशक और अनुसंधान निदेशक, पशु पोषण विभाग के संबंधित वैज्ञानिकों और शोध से जुड़े टीम के सदस्यों से बातचीत की। इस दौरान डेयरी पशुओं पर चल रही शोध गतिविधियों का निरीक्षण किया गया और स्वास्थ्य तथा उत्पादन प्रदर्शन की समीक्षा की गई। यह अनुसंधान सही दिशा में आगे बढ़ रहा है और 4-5 महीने में पूरा होने की उम्मीद है।

आईसीएआर-राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान (एनडीआरआई) डेयरी क्षेत्र के प्रमुख संस्थानों में से एक है, जिसने डेयरी



उद्योग के विकास में बहुत योगदान दिया है और अपने निरंतर अनुसंधान के साथ भारत के दूध उत्पादन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

एनडीआरआई के पास प्रतिदिन 60,000 लीटर से अधिक दूध की प्रसंस्करण क्षमता वाला एक व्यावसायिक मॉडल डेयरी प्लांट भी है, जो छात्रों और वैज्ञानिकों को अनुसंधान

प्रयोगशालाओं में विकसित उत्पादों और प्रक्रियाओं के लिए संचालन बढ़ाने के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण सुविधाएं प्रदान करता है।

एनडीआरआई के अनुसंधान और विकास गतिविधियों के तीन प्रमुख क्षेत्र हैं - डेयरी उत्पादन, डेयरी प्रसंस्करण और डेयरी विस्तार/प्रबंधन। इसने दूध की गुणवत्ता और सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय रेफरल प्रयोगशाला और जलवायु लचीला पशुधन अनुसंधान केंद्र की एक अत्याधुनिक सुविधा भी स्थापित की है। रेफरल प्रयोगशाला दूध और दूध उत्पादों के लिए अनुसंधान और विकास और मानकों के विकास के लिए उपयोगी है।

सीएसआईआर-सीरी में राष्ट्र के 78वें स्वतंत्रता दिवस का भव्य आयोजन

सीएसआईआर-सीरी में 15 अगस्त, 2024 को राष्ट्र का 78वाँ स्वतंत्रता दिवस समारोह धूमधाम से आयोजित किया गया। संस्थान के प्रांगण में आयोजित समारोह में संस्थान के निदेशक डॉ. पी. सी. पंचारिया मुख्य अतिथि थे। इस वर्ष नई परंपरा का शुभारंभ करते हुए स्थानीय/निकटवर्ती क्षेत्र से देश की रक्षा में अपने प्राणों का बलिदान देने वाले माँ भारती के सपूत करगिल युद्ध के शहीद श्री राजकुमार पूनिया, सेना मेडल की वीरांगना श्रीमती सुमित्रा देवी जी को विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिकों व अधिकारियों के साथ संस्थान के सहकर्मियों एवं पूर्व सहकर्मियों सहित उनके परिजन, सीरी विद्या मंदिर के छात्र-छात्राएं व शिक्षकगण, कॉलोनीवासी आदि उपस्थित थे। संस्थान के प्रशासन नियंत्रक श्री जय शंकर शरण एवं अन्य अधिकारियों ने अधिकारियों ने मुख्य अतिथि डॉ पी सी पंचारिया का समारोह स्थल पहुँचने पर स्वागत किया।

मुख्य अतिथि डॉ. पी. सी. पंचारिया, श्रीमती सीमा पंचारिया सहित श्रीमती सुमित्रा देवी, सीरी विद्या मंदिर की प्राचार्या श्रीमती बी. राशेल दयाल एवं संस्थान के वरिष्ठ अधिकारियों ने माँ भारती के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के निदेशक डॉ. पी. सी. पंचारिया द्वारा ध्वजारोहण के साथ हुआ। ध्वजारोहण के बाद उपस्थित अतिथियों, अधिकारियों, सीरी विद्या मंदिर के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों सहित उपस्थित जनसमूह ने सीरी विद्या मंदिर के विद्यार्थियों

द्वारा बजाई गई बैंड-धुन पर राष्ट्रगान गाया। तदुपरांत संस्थान के सुरक्षा कार्मिकों एवं सीरी विद्या मंदिर के एनसीसी कैडेट्स ने मुख्य अतिथि डॉ. पी. सी पंचारिया को 'गार्ड ऑफ ऑनर' दिया।

अपने स्वतंत्रता दिवस संबोधन में डॉ. पी. सी. पंचारिया ने उपस्थित अधिकारियों व अन्य सहकर्मियों सहित संस्थान के सभी सहकर्मियों, उनके परिजनों को राष्ट्र के 78वें स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी। उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों को आहूत करने वाले अमर शहीदों के बलिदान को याद करते हुए उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

डॉ. पंचारिया ने अपने स्वतंत्रता दिवस संबोधन में बताया कि देश की स्वाधीनता के लिए प्रथम आंदोलन वर्ष 1857 की क्रांति के साथ आरंभ हुआ। उन्होंने इस अवसर पर उपस्थित जनसमुदाय के समक्ष प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी विनायक दामोदर सावरकर के योगदान को याद किया। डॉ पंचारिया ने कहा कि वे कालांतर में वीर सावरकर के नाम से प्रसिद्ध हुए। अपने संबोधन में उन्होंने बताया कि सावरकर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख क्रांतिकारी होने के साथ-साथ चिन्तक, समाजसुधारक, इतिहासकार, कवि, ओजस्वी वक्ता तथा दूरदर्शी राजनेता भी थे। अंत में उन्होंने स्वतंत्रता दिवस समारोह में उत्कृष्ट बैंड



प्रदर्शन, परेड (मार्च पास्ट) एवं अनय प्रस्तुतियों के लिए सीरी विद्या मंदिर के विद्यार्थियों की सराहना की और आयोजन से जुड़े सीएसआईआर-सीरी के सहकर्मियों, विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती बी. राशेल, शिक्षकों और अन्य स्टाफ को धन्यवाद दिया।

इससे पूर्व प्रशासन नियंत्रक श्री जय शंकर शरण ने उपस्थित जनसमुदाय को वर्ष 1999 के करगिल युद्ध में पाकिस्तानी सेना एवं घुसपैठियों से लोहा लेते हुए वीरगति को प्राप्त हुए शहीद राजकुमार पूनिया, सेना मेडल का संक्षिप्त परिचय दिया।

डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक सीएसआईआर-सीरी एवं श्रीमती सीमा पंचारिया ने शहीद राजकुमार पूनिया की वीरांगना श्रीमती सुमित्रा देवी को संस्थान की ओर से शॉल व स्मृति चिह्न भेंट कर उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

इस अवसर पर संस्थान के सुरक्षा कर्मियों के दल ने मार्च पास्ट द्वारा परेड का नेतृत्व किया। सीरी विद्या मंदिर के एनसीसी व स्काउट दलों सहित विद्यार्थियों के दलों ने



भी अपने-अपने सदनों के ध्वजों के साथ विद्यालय के बैंड की धुन पर मार्च पास्ट किया।

उपस्थित जनसमुदाय ने तालियों की गड़गड़ाहट से उनका उत्साहवर्धन किया। मुख्य अतिथि एवं संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया ने परेड और बैंड की सलामी ली।

समारोह के अंत में डॉ पी सी पंचारिया एवं अन्य अधिकारियों ने शांति के प्रतीक के रूप में आकाश में रंग-बिरंगे गुब्बारे छोड़े तथा उपस्थित स्कूली छात्र-छात्राओं एवं अन्य लोगों को टॉफियाँ वितरित कीं। इसके अतिरिक्त कार्यक्रम देखने आए दर्शकों को मिठाई वितरित की गई।

संस्थान के मुख्य लॉन में आयोजित

स्वाधीनता दिवस समारोह का सुंदर संचालन सीरी विद्या मंदिर के विद्यार्थियों कु. अंजलि और मा. लावण्य जादम ने किया।

संस्थान के जयपुर परिसर में भी स्वाधीनता दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जयपुर परिसर के प्रभारी वैज्ञानिक श्री साई कृष्णा वड्डादि ने ध्वज फहराया और सहकर्मियों को 78वें स्वतंत्रता दिवस की शुभकामना दी।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर संस्थान में भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान का शुभारंभ भी किया गया। स्वतंत्रता दिवस समारोह के उपरांत डॉ पी सी पंचारिया और विशिष्ट अतिथि सहित संस्थान के वरिष्ठ अधिकारियों एवं उनके परिजनों ने सीरी परिसर में पौधारोपण किया।

तिरंगा यात्रा एवं संध्या फेरी दिनांक 14

अगस्त, 2024 को 78वें स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर तिरंगा यात्रा एवं संध्या फेरी का आयोजन भी किया गया।

निदेशक महोदय के नेतृत्व में आयोजित संध्या फेरी में संस्थान के वैज्ञानिकों एवं वरिष्ठ अधिकारियों सहित अन्य सहकर्मियों, प्रशिक्षार्थी छात्र-छात्राओं व कॉलोनी वासियों ने कॉलोनी परिसर में राष्ट्र ध्वज के साथ पदयात्रा करते हुए देश भक्ति गीत गाए। डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी ने स्वतंत्रता दिवस के संपूर्ण कार्यक्रम को भव्य रूप से आयोजित करने के लिए संस्थान के सभी सहकर्मियों को धन्यवाद दिया।

इस प्रकार सीएसआईआर-सीरी में 78वें स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया।

सीएसआईआर-आईआईटीआर में ग्लोबल बायो-इंडिया रोड शो का आयोजन

सीएसआईआर- भारतीय विषविज्ञान अनुसंधान संस्थान ने देश में स्टार्ट-अप नवाचार को बढ़ावा देने तथा इनक्यूबेटर नेटवर्क को मजबूत बनाने के उद्देश्य से ग्लोबल बायो-इंडिया रोड शो- बायोनेस्ट@सीएसआईआर-आईआईटीआर का आयोजन किया।

ग्लोबल बायो-इंडिया रोड शो 23 अगस्त 2023 को सीएसआईआर-भारतीय विष विज्ञान अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-आईआईटीआर) लखनऊ, गेन (GAIN) (सरकारी, शैक्षिक और उद्योग का एक नेटवर्क) प्लेटफॉर्म तथा कैरीज (CAiRES) हितधारकों को शामिल करते हुए अनुसंधान में नवाचार के लिए परामर्शदात्री व्यवस्था के संयुक्त सहयोग से ग्लोबल बायो-इंडिया रोड शो तहत बायोनेस्ट@सीएसआईआर-आईआईटीआर लखनऊ में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम की शुरुआत एक उद्घाटन समारोह के साथ हुई। इस अवसर पर डॉ. रामकृष्णन पार्थसारथी, वैज्ञानिक-इन-चार्ज, बायोनेस्ट, प्रौद्योगिकी विकास और नवाचार केंद्र (टीडीआईसी), सीएसआईआर-आईआईटीआर ने अपने स्वागत सम्बोधन में विभिन्न क्षेत्रों से स्टार्ट-अप और उद्यमिता का समर्थन करने के लिए लखनऊ स्थित इनक्यूबेटरों के बीच नेटवर्किंग को मजबूत करने और तकनीकी नवाचार विकसित करने पर व्यावहारिक चर्चा की।

कार्यक्रम की शुरुवात सम्मानित अतिथि प्रोफेसर भारतेंदु नाथ मिश्रा के संबोधन से हुई। प्रो. मिश्रा डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय, लखनऊ में इनोवेशन



और सामाजिक उद्यमिता के डीन के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने अपने भाषण में इनक्यूबेशन केंद्रों की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया, जो अभिनव विचारों को पोषित करने और परिष्कृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, उन्होंने इन केंद्रों की तुलना उपजाऊ भूमि से की और कहा कि यही वह मूल स्थल होता है जहाँ रचनात्मकता पनप सकती है और प्रभावशाली समाधानों में बदल सकती है।

डॉ. एन. भास्कर, निदेशक, सीएसआईआर-आईआईटीआर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में इनक्यूबेशन इकोसिस्टम के सामूहिक विकास पर ध्यान केंद्रित करते हुए हितधारकों के बीच सहयोग के महत्व पर जोर दिया, ताकि नवाचार परिदृश्य में सभी प्रतिभागियों को लाभ पहुंचाने वाले संपन्न वातावरण को सुनिश्चित किया जा सके। उन्होंने राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि स्टार्ट-अप की यात्रा एक मिशन की तरह है और प्रतिभागियों को हमारे राष्ट्र के लाभ के लिए इसे हासिल

करने की कामना की।

इंटीग्रल स्टार्टअप फाउंडेशन की निदेशक और इंटीग्रल यूनिवर्सिटी में इनक्यूबेशन और उद्यमिता विकास केंद्र की निदेशक डॉ. निदा फातिमा ने माता-पिता की पालन-पोषण की भूमिका और इनक्यूबेटर केंद्रों के कार्यों के बीच एक आकर्षक समानता को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि कैसे, पेरेंटिंग की तरह, इनक्यूबेटर स्टार्टअप को समर्थन, मार्गदर्शन और संसाधन प्रदान करते हैं, जिससे उन्हें प्रतिस्पर्धी माहौल में बढ़ने और सफल होने में मदद मिलती है। इस कार्यक्रम के अगले वक्ता के रूप में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय (एकेटीयू) के इनोवेशन हब के प्रमुख डॉ. महीप सिंह ने एकेटीयू में उपलब्ध बायोइन्क्यूबेशन सुविधाओं और वित्तपोषण के अवसरों के बारे में विस्तार से बताया, तथा बायोटेक स्टार्टअप्स को समर्थन देने और जीवन विज्ञान के क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा देने के

लिए विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया

डॉ. सोनाली टंडन, मुख्य प्रबंधक, निवेश, डीबीटी-बाइरैक ने आगामी ग्लोबल बायो इंडिया कार्यक्रम पर एक जानकारीपूर्ण सत्र का नेतृत्व किया। उन्होंने बाइरैक के माध्यम से उपलब्ध वित्तपोषण अवसरों के बारे में भी जानकारी दी, विभिन्न वित्तपोषण विधियों और अनुदान कार्यक्रमों को स्पष्ट किया जो विकास के विभिन्न चरणों में जैव प्रौद्योगिकी नवाचारों का समर्थन करते हैं।

कार्यक्रम का समापन एक महत्वपूर्ण सत्र के साथ हुआ, जिसमें इंटीग्रल

यूनिवर्सिटी, स्टार्ट-इन-यूपी से जुड़े इनक्यूबेटर और बायोनेस्ट @ सीएसआईआर-आईआईटीआर के स्टार्टअप्स ने अपने विचार और नवाचारों को उपस्थित दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया। तत्पश्चात कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी प्रतिभागियों और हितधारकों के



योगदान को मान्यता देते हुए धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

योगदान को मान्यता देते हुए धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

केंद्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन - इंडो स्विस प्रशिक्षण केंद्र (सीएसआईओ-आईएसटीसी) के 59वें दीक्षांत समारोह का आयोजन

केंद्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन - इंडो स्विस प्रशिक्षण केंद्र (सीएसआईओ-आईएसटीसी) का 59वां दीक्षांत समारोह आयोजित किया गया, जिसमें इसके स्नातक छात्रों की उपलब्धियों के लिए एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रो. शांतनु भट्टाचार्य, निदेशक, सीएसआईओ, चंडीगढ़, मुख्य अतिथि श्री यथिराज कंसल, महाप्रबंधक एवं व्यापार प्रमुख, विप्रो 3डी और सम्मानित अतिथि के रूप में डॉ. शैलेंद्र सिंह, कार्यकारी उपाध्यक्ष, मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड उपस्थित हुए।

समारोह के दौरान श्री यथिराज कंसल ने स्नातकों को एक प्रेरक संबोधन दिया, जिसमें आज के तेजी से बदलते तकनीकी परिदृश्य में नवाचार और अनुकूलनशीलता के महत्व पर जोर दिया गया। उन्होंने छात्रों को चुनौतियों को स्वीकार करने और अपने कौशल का लाभ उठाकर अपने पेशेवर यात्रा में सार्थक बदलाव लाने के लिए प्रोत्साहित

किया। श्री कंसल ने कहा कि जब आप कार्यबल में कदम रखते हैं, तो याद रखें कि प्रत्येक चुनौती एक विकास का अवसर है। हमें हमेशा जिज्ञासु बने रहना चाहिए और आजीवन सीखने का प्रयास करना चाहिए और अपने कार्यक्षेत्र के लिए जो भी विषय चुनें, उसमें महत्वपूर्ण बदलाव लाने का प्रयास करें।

अपने संबोधन में श्री कंसल ने आधुनिक कारोबारी माहौल में सहयोग की बढ़ती प्रासंगिकता पर भी प्रकाश डाला, स्नातकों से रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए विविध टीमों के साथ काम करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि भविष्य उन लोगों का है जो अपने ज्ञान को दूसरों की ताकत के साथ जोड़ सकते हैं। उन्होंने छात्रों को नेटवर्क बनाने, अपने विचारों को साझा करने और सलाहकारों से मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने



कहा कि हम साथ मिलकर ऐसे समाधान सृजित कर सकते हैं जो समाज पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं।

डॉ. शैलेंद्र सिंह ने अपने संबोधन में शिक्षा में व्यावहारिक अनुप्रयोग के महत्व पर अंतर्दृष्टि साझा की। उन्होंने मारुति सुजुकी में अपने व्यापक अनुभव को साझा करते हुए उद्योग के भविष्य को आकार देने में स्नातकों की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि सैद्धांतिक ज्ञान महत्वपूर्ण है,

लेकिन आप उस ज्ञान को कैसे लागू करते हैं, यह आपकी सफलता को परिभाषित करेगा। केवल इस बात पर जोर न दें कि आप यहाँ क्या सीखते हैं, बल्कि इस बात पर भी जोर दें कि आप वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने के लिए उस सीख को कैसे लागू कर सकते हैं। यह प्रभावी इंजीनियरिंग की आधारशिला है। डॉ. सिंह ने छात्रों को अपने पेशेवर जीवन में ईमानदारी और समर्पण जैसे मूल्यों को बनाए रखने के लिए भी प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि अपने सिद्धांतों से कभी समझौता न करें और याद रखें कि कड़ी मेहनत और ईमानदारी हमेशा सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है। आपकी यात्रा अभी शुरू हुई है और हर कदम के साथ आप इस संस्थान की विरासत को अपने साथ लेकर चलते हैं।

इस कार्यक्रम के दौरान कुल 101 छात्रों को डिप्लोमा प्रदान किए गए, जिनमें चार डिप्लोमा पाठ्यक्रमों में उल्लेखनीय उपलब्धियां शामिल थीं, जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:-

इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग में 3 वर्षीय डिप्लोमा (2021 बैच): 41 छात्र

मैकेनिकल इंजीनियरिंग में 3 वर्षीय डिप्लोमा (टूल एंड डाई) (2021 बैच): 36 छात्र

मेक्ट्रॉनिक्स और औद्योगिक स्वचालन में 4 वर्षीय एडवांस डिप्लोमा (2020 बैच): 12 छात्र

डाई और मोल्ड मेकिंग में 4 वर्षीय एडवांस डिप्लोमा (2020 बैच): 12 छात्र

दीक्षांत समारोह में प्रतिष्ठित पुरस्कारों की प्रस्तुति के साथ उत्कृष्ट शैक्षणिक प्रदर्शन को भी मान्यता दी गई। डाई और मोल्ड मेकिंग में 4 वर्षीय एडवांस डिप्लोमा में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए निदेशक स्वर्ण पदक समीर खत्री (2020-022) को दिया गया, जबकि इसी श्रेणी में प्रिंसिपल रजत पदक सत्यम दीक्षित (2020-066) को दिया गया।

मेक्ट्रॉनिक्स और औद्योगिक स्वचालन में 4 वर्षीय उन्नत डिप्लोमा में, अनुज कुमार (2020-138) ने निदेशक स्वर्ण पदक अर्जित किया, और सौरभ (2020-128) ने प्रिंसिपल रजत पदक प्राप्त किया।

मैकेनिकल इंजीनियरिंग (टूल एंड डाई) में 3-वर्षीय डिप्लोमा के साथ उपलब्धियां जारी रहीं, जहां निदेशक स्वर्ण पदक नागांश वशिष्ठ (2021-005) को को मिला तथा प्रिंसिपल रजत पदक प्रीतम कोले (2021-024) को प्राप्त हुआ। अंत में, गुरकीरत सिंह (2021-144) को इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग में 3-वर्षीय डिप्लोमा में असाधारण प्रदर्शन के लिए निदेशक स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया, जबकि सुदीप वर्मा (2021-103) को प्रिंसिपल रजत पदक प्राप्त हुआ।

इस समारोह में शिक्षा और तकनीकी उन्नति में उत्कृष्टता के लिए सीएसआईओ-आईएसटीसी की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया गया।

कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों / जनसम्पर्क अधिकारियों / हिन्दी अधिकारियों / अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों तथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों / पुरस्कार / सम्मानों / कार्यशालाओं / संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार / सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में संपादक, सीएसआईआर समाचार को भेजने की कृपा करें।

संपादक
सीएसआईआर समाचार